1. गुम्म भेल ठाढ़ छी - गोपेश
2. बलचनमा - यात्री

MAITHILI

गुम्म भेल ठाढ़ छी

Mai
891.431 (mai)
GoP

रचयिता
श्री गोपालजी झा 'गोपेश'

SAHITYA AKADEMI
Library
42791
RAVINDRA BHAVAN NEW DELHI

प्रकाशक
ठुट्ठा परिवार
काजीपुर, पटना-४

दाम — एक टाका मात्र

प्रकाशक
वृद्धा परिवान
पहिल खेप
कार्जीपुर, पटना-४

सर्वाधिकार
कविक अधीन

मुद्रक
आदर्श प्रेस
पटना-४

आहे माहे

अनुभूति हो वा अभिव्यक्ति मौलिकताक दावी केओ नहि कए सकैछ। मोनो स्तर पर नहि। जीवन मे की नव थिक आ की पुरान, तकरो निर्णय करब कठिन। सत्यक शिला पर इतिहासो धसाइत धसाइत विलुप्त भए जाइछ। जानि नहि भिन्नतर ओ सौंदर्यक आवर्त्तन मे कतेक प्रत्यावर्त्तन छैक। परन्तु एतेक धरि सत्य जे समयक पएर तर जे दबि गेल से 'पुरान' बीच आ' जकर प्रतिबल बसाते नहि बहए से 'नव'। एहि संग्रह मे युगधर्म ओ स्थानीय रंगक निखार कहाँ धरि उतरल अछि तकर निर्णय करबाक अधिकार अपनहि कें अछि। हमर पहिल कविता-संग्रह 'सोनदाइक चिट्ठी' बहिआ बहराएल तहिआ मैथिली जगत मे ओकर रंग विरंगक टिप्पणी भेल, जकर उल्लेख करब एतए प्रयोजनीय नहि बुझना जाइछ। मुदा, अपन पहिल संग्रह सँ हम पूर्ण सन्तुष्ट छलहुँ आ' पाठक लोकनि मे को ततेक लोकप्रिय चित्र भेल जे उत्साहित भऽ, कए आह दोसरो संग्रह दए रहल छी।

आदरणीय प्रोफेसर श्री हरिमोहन झा जी कें हम साहित्य-प्रणयनक क्षेत्र मे अपन दिशा-निर्देशक मनैत छिऐन्हि। तें हुनका सँ उऋण नहि भए सकैत छी। कविताक शब्द-योजना मे अपन गृहिणी श्रीमती प्रभावती झा, बी० ए० आनर्स सँ बहुत सुझाओ भेटल अछि। मुदा हुनका की धन्यवाद दिऐन्हि? आवरण शिल्पी श्री प्रशान्त कें तेहो नहि बिसरि सकैत छिऐन्हि जे

एतेक कार्य व्यस्तता रहितहुँ हुएँ तत्परता देखाय देलन्हि । बन्धुवर श्री कैलाश प्रसाद सिंह (पटना हाईकोर्ट) तथा श्री इन्द्रकान्त झा (कार्यालय सचिव चेतना समिति) एहि संग्रह केँ छपरबा लेल सदिखन टोकारा देत रहलाह तेँ हिनकहुँ प्रति अपन आभार प्रकट करैत छी। अन्त मे हुक्का परिवारक भाइनजन श्री अर्जुन ठाकुर केँ धन्यवाद देत छिऐन्हि जे मैथिली प्रकाशन दिशि प्रगाढ़ अनुराग देखओलन्हि अछि। आदर्श प्रेसक स्वत्वाधिकारी श्री सदेव बाबू सेहो धन्यवादक पात्र थिकाह जे एतेक कम समय मे तत्परता पूर्वक पोथी बहार कए सकलाह।

हरबड़ी मे जे प्रेसक त्रुटि रहि गेल अछि, तदर्थ क्षमा प्रार्थी छी।

कार्तिक धवल त्रयोदशी — श्री गोपालजी झा 'गोपेश'

विद्यापति स्मृति दिवस — २५-११-६६

शक: १८८८

क्रम

मिथिलाक प्रतिनिधि	....	१
हम आ हमर युग	....	४
एक व्यक्तित्व : दुइ चित्र	....	६
फ्रीलान्सर	....	९
युग धर्म	....	१२
हे कवि कोकिल आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ	....	१४
यथार्थ	....	२०
कल्पना	....	२१
विजुलिक दिमाग		
आ' यन्त्रक जाँत	....	२२
भारतक माटि सँ	....	२३
सोनदाइक नव चिट्ठी	....	२४
उपलब्धि	....	२६
मनुक्खक अस्तित्व	....	३१
टहाटही इजोरिआ मे	....	३२
शौर्य मे ककरो सँ कनैस नहि	....	३३
जवान केँ सम्बोधित गृहिणीक दू आखर	....	३५
प्रयोगवादी गमछा	....	३७
हिलकोर	....	३८
जय जवान जय किसान	....	४०
युगबोध	....	४१
बारह वर्षक बाद सासुरक यात्रा	....	४६
गुम्म भेल ठाढ़ छी	....	४८

समर्पण

प्रो० श्री अनिरुद्ध झा एम० ए०
दर्शन विभाग, पटना विश्वविद्यालय

विमल कीर्ति जनिकर पसरल अछि
विद्या बुद्धि अपार
अर्पित हो अग्रज चरण में
अनुज क ई उपहार

—'गोपेश'

मिथिलाक प्रतिनिधि

ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहि देश केर माटि पानि मे नव तीरम ऊइ
जाहिठाम हँसइत अछि धरती खल खल खस खल
जाहिठाम नवनागिराम होइछ जड़काला
जाहिठाम शाद्वल पर चमकए मोती सन सन पाला
जाहि देश मे लहलहाइत अछि दोलडिक गम्हड़ा
जाहिठाम अगणित प्रसून पर लुबधए भम्हड़ा
जाहिठाम कमलाक धार मे फुदकए मारा पोटी
अन्नपूर्णा भरलन्हि जत कहिओ घर घर कोठी
कौशिकीक जल झरइत रहइछ कलकल जतए निनाद
जाहि भूमि कें भेल न कहिओ रंचहुमात्र विषाद ।
जाहि देश मे प्रकृति नचइ अछि नदिसन छम छम छन छम
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहिठाम पाओल जाइछ छोभ सन सुन्दर आँखि
फड़फड़बए खगमात्र जाहिठाँ सुतलाहि सँ पाँखि
जाहि देश मे होइत अछि तरुआरि सनक भ्रू-रेख
देखए सन थाना विचार मे अवपहरा ओ लेख
अदूषक कोढ़ी सन दुहदुह जत नारी केर ठोर
मधुर बयार बहए जहँ नहुँ-नहुँ रम्य जाहिठाँ भोर
जाहि देश मे जपइछ सभ जय जय भोला शिवदानी

नामी जत्त बुड़क पटुआ ओ बेलिक नसिदानी
जाहिठाँक चिक पेथ धरोहरि भिरजइ साटा पाग
कोकटिक भोली गान-गाम मे रुचिगर पटुआ साग
जाहिठाम चढ़िओँ होइछ टेमा पकाम ओ सीक
जाहि देश मे मैहर केर कीओ लगैत अछि नीक
जाहिठाँक उल्लेख्य पर्व थिक कल त्रयोदशी चौठीचान
पट ओ जट्टिन लोहथि जत्त इन्द्रहु केर गुमान
जाहि भूमि एन साकुर नहि अछि कोनो देश ओ ठाम
आयेसी सरहोज सारि ओ सरही कलमा आम
'सत्यं शिवं सुन्दरम्' केर जे पावन संगम थीक
मसा-चकेबा भातृद्वितिया स्नेहक जतए प्रतीक
होइत छथि नेपहि मे लुदिगरि जाहि देश केर नारि
प्रियगर लगइछ जनमानस कें जनिकर डहकन गारि
जाहि देश मे गाकोल जाइछ तिरहुति ओ समदौन
जाहि देश मे नव विवाहिता करथि बहुत मनौन
धिसरथि नहि जत्त केर धीया लौक तुमारी पूजब
ईबाहिक गीरह जइठामक नहि अनैत अछि पूजब
जाहि देश मे अहिपन सुन्दर ओ सीकीक चँगेरी
जाहि देश मे बटुओ होइछ बड़का गोट गँगेरी
एम जानित अछि जाहिठाम केर देश-कोस मे भोज
नाजतिहार होइतहि रहइछ घर आँगन मे रोज
जाहिठाँक इतिहास अपन अछि आर दिव्य भूगोल
जाहि देश मे सौजन्यक नहि भए सकैत अछि मोल

जाहि देश केर लोक न होइछ कतरो डरें सकदम
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहि देश मे होइछ चहटगर एहो ओ पकमान
सोआ मरल पिरुकिआ अनुपम कोआगराक मखान
मोटगर ढाहिक दही जत्त आओर तनहा पुड़ा
अति विश्वास सँ कोइरवि गुहिओ जत्त रोहुक मूड़ा
मालगोग केर भात मुजफ्फर तइ पर राहड़िक दालि
खड़कइ पी तरल तिलकोर अछि जत्त केर चालि
जाहि देश मे बिलहल जाइछ खिलवट्टी मे पान
जनी सुपारी भरि-भरि बाकुट जाहिठाँक सम्मान
जाहि ठाम उपजहि समाठ पचरैतहि रहइछ धम धम
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम
जाहिठाम प्रतिभा सबहुक थिक जन्म-सिद्ध अधिकार
मध्य-न्याय करे दीप जरौतनि गंगेशक अवतार
जाहि देश मे वाचस्पति ओ मंडन केर पचार
एक-एक साधक केर जइठाँ पसरल कीर्ति अपार
तीर-भुक्ति छथि गौरवशालिनि जनक जनिक हरवाह
जाहि ठाम कहिओ कलाह शास्त्रक पंडित चरवाह
जाहिठाम एखनहुँ जोगोल अछि गप्प सभक कनतोड़
जाहि देश केर गोनू झा केर भेटए न कतहु जोड़
जाहि देश मे गाछ-टाट पर अमरबेलि लतराएल
जाहिठाम डबरहु मे शोभए कमलक फूल फुलाएल
जाहिठाम जन-जन केर मुख सँ चुबइछ अमृत तादिसन
ताहि देश केर प्रतिनिधि छी हम

हम

आ

हमर

युग

बुद्धि बलें सेवइत छी हमरा सोचनि
युग हमर आन्हर नहि
शरीर सँ पातर लकलक होइतहुँ
विवेक हमर नाजर नहि
उपर सँ बुझि पड़ी विवेक ने बचरो
स्वार्थक ज्वाला ओ कटुकालिमा
आ' छल-छद्म सँ रंजित हमर परिधान
मुदा हम सिकहुँ योग्यता ओ सामर्थ्यक धरोहरि
धर्म, समाज ओ अन्धविश्वास
रहल अछि सभ दिन सँ उपदेष्टामात्र
हृदय ओ बुद्धि
कल्पना ओ यथार्थ
सिद्धान्त ओ व्यवहार
दुहुँक दुइ बाट, दुइ बाट

हम सिकहुँ घोर बुद्धिवादी
आस्था सँ तर्कक कसौटी पर कसनिहार
अधिकार आ' कर्त्तव्यक प्रति सचेतन वर्द्धमान
ओ स्वतन्त्रिक युगक क्रान्तिदर्शी मानव
विघटित सभ्यताक मूल्य
आ' कुंठित आस्थाक हेतु
चेतनाक उद्घोष
आ' सम्भावनाक दिव्य-स्रोत

—: o :—

एक व्यक्तित्व :
दुइ चित्र

(१)

बहसओने एक भाग अलसीसिअन कुकुर
आ' पजिअओने लाल दुइ दुइ टोर वाली स्कटलैण्डक पिशोरी के
स्लेटी रङ्क तीस हजारी कार पर मोटका चुरुट धुकइत
चक्कर कटइ छथि नगरक चारू कात
कपड़ाक थोक व्यापारी श्री पर्कोडीमल झुनझुनिआँ
अरे ! के नहि जनइछन्हि हिनक नाम
जरइ छन्हि नगर भरि मे हिनके टारा घी
चलइत छन्हि हिनक चरि-चरि टा सिनेमा
आ' कतेको प्रस्तुत वस्त्र भण्डार
टीशन सँ मिलले दक्खिने
फोलसन्हि हे' विलेंतक उतार पर हाल हे मे भव्य होटल
स्वदेश ओ परदेश सभटा छन्हि रेहल-सेहल
कलकत्ता, बम्बई, पेरिस ओ स्विटजरलैण्ड
आजुक भौतिकवादी युग मे
इएह थिका ब्रह्मा, विष्णु ओ महेशक प्रतीक
आ' इएह थिका सभ्य मानव
ज्ञान-गुण गरिमा मण्डित

हिनक व्यक्तित्वक सोभाँ
नतमस्तक कोनो पण्डित
बहसओने एक भाग अलसीसिअन कुकुर
आ' पजिअओने लाल दुइ दुइ टोर वाली स्कटलैण्डक पिशोरी के
स्लेटीरंगक तीस हजारी कार पर मोटका चुरुट धुकइत
चक्कर कटइ छथि नगरक चारू कात
कपड़ाक थोक व्यापारी श्री पर्कोडीमल झुनझुनिआँ

(२)

धन्य थिका सेवक जी
करएँ आ' देखथि एन जनिक आदर्श व्यक्तित्व
गांधी बाबाक जे पक्का अनुगामी
गीताक अठारमो अध्याय जनिका जीहे पर
"अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम् ।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥"
लोक सेवा जनिक जीवनक पुनीत ध्येय
जनताक हितार्थ मे जे रेल पर चढ़इत छथि
आ अगबे जे सर्वोदयक सहरि दरड़ इथि
अपार जन समूह जनिक उत्साहवर्द्धक भाषण सुनि
अगिला चुनाओ मे जितबाक लए आकुल अछि
धन्य थिका त्यागी, तपस्वी ओ मनस्वी व्यक्ति
हृदय परिवर्त्तन जनिक कालहए खन भेल अछि
केओ बजैछ इएह थीक चाणक्यक कूटनीति

केलो वर्जक इएह लोक आधुनिक राजनीति
जकरा जे मोन होउ से कहबो करा
ओ तँ थिका जननायक
छथि न आब बनिया
पढ़ाओल रेशमीक बनिआनि पर खदरक कुर्ता
श्री पक्षीमल झुनझुनिआ

—: ० :—

फ्रीलान्सर

धार सँ मिरले दच्छिन
बेस अवाए बोल छइ
आ' विच्छहि मे स्थित छइ
शिव लिङ्गवत् प्रस्तर खण्ड
कुहरा तारक भोक सँ
चुबइत छइ घुन्ने घुन्न
स्फूर्तिदायक मीरक रस
आ' भोग लगाइ छन्हि शिवजी कें
कामोद्योगक चहटगर टॉनिक
पुरिबा पछवा लोटइ अछि-शिलाखण्ड पर
साँझ परात
ओ रङ्ग विरंगक गर्द सँ
बाबाक स्वागत करइत अछि
आ' चढ़बइ अछि हुनक डाली मे
अधजरुआ बीड़ीक टुकड़ी
खड़खड़ सलाइक काठी
कोनो निराश प्रेमीक डायरीक पन्ना
हॉलीउड तारिकाक नेल पालिसक खपी

लिपस्टिकक टुइ टुकड़ी
स्वतन्त्र उमेदवारक जम्मा पहिरने

भोट मे ठाढ़ कोनो पार्टीक विक्षुब्ध-
कार्यकर्ताक एलेक्शन पोस्टर
आ' दुरगमनिआ कनिआक खोँइछ महक
दू-दू टा दूनिधान

जुटितहि रहइछ ओतए
विश्वविद्यालय कालेज छात्र छात्राक्यहुरंगी दल
जेना कोनो तीर्थस्थल पर
भक्त जन जुटइत छी

खाइत अछि
पिबइत अछि
भरि पेट
भरि पोख
आ' चढ़इत छन्हि ओहिर दानी बूढ़ा कें
सेँडविच टोस्ट
ओ' मार्टिन टोपी
आ' चकर चकर बाबा ताकितहि रहइत छथि

मक्खन चीनक पैकट
नाइलनक बुश सर्ट
रेशमी सलवार
डालीदार कुर्ता

हवाइ चप्पल
आगफा कैमरा
आ' धर्मस लटकओने
प्रज्ञा परिणत मनुष्यतानक दुलकी चालि

बाबा फ्रीलान्सर छथि
तेँ नहि छन्हि मन्दिर
आ' नियमित रूपेँ
सहर मे कर गोगो

नहि लगइत छन्हि
फ्रीलान्सर साप्ताहिक
इएह थीक दिव्य लक्षण
फल्गू नदी जेकाँ अन्तः सलिल प्रवाह

ओ मुक्त हास-परिहास
तेँ मनुष्यक स्वच्छन्दता कें
कहल जा सकैछ जीवनक चरम उत्कर्ष
शंकरक महिमा

ऐतिहासिक गरिमा
आ' व्यापक शिवतत्त्व

युग धर्म

लोक हम वनस्पति-पुरुष
कोनो देश
कोनो प्रान्त
उपमा नहि आगटाम
खाइत छी पिष्टुट
आ' पिबइत छी गरम चाह
कोडआ सँ नापि-नापि
तेल छी सुगन्धित तेल
ढारइ छी मगज पर लोटाक लोटा पानि
रगड़इ छी साबुन पर साबुन
बनएबा लए कान्ति
आ' पएबा लए शान्ति
मयलन जीनक पैंट पर सँ
चढ़बइ छी मनीला
पहिरइ छी हवाइ चप्पल
कहइत छी लीला
मीक जेकाँ घोसने छी
फायडक सिद्धान्त सार
पइसाइ छी अचेतन मे निर्धोसि

फोलि हम चेतन द्वार
विश्लेषण करइत छी
युग-युग सँ मोतिआएल दमित इच्छाक
तृष्णाक ज्वाला मे
ढार कएल अन्तरक श्रद्धा
आ' घोरि लेल
भरल कठौत आडम्बर मे
अपन बहत्तरि हाथक अँतरी के

हे कवि कोकिल आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(ले ख क)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
प्रकाशक [illegible] करितहुँ
अपनेहि लिखितहुँ
अपनेहि छपितहुँ
रीन काढ़ि पाथ [illegible]
आलोचक [illegible] लिखितहि मनितहुँ
[illegible] क [illegible] सड़ [illegible]
[illegible] टाड़ अड़बितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(गी त का र)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
मक्खन [illegible] फूल पेट पर

[illegible] चढ़बितहुँ
हवाई [illegible] कए
लोकेँ बम्बई केर टिकट कटबितहुँ
खूब चहटगर रसगर फिल्मी गाना लिखितहुँ
लता आर गीता केर कंठहार बनि जइतहुँ
फिल्मजगत् मे नाम कमबितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(ठी के दा र)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
बान्हक टिकेदार भ' जइतहुँ
अन्नक थकथक गोला फोलितहुँ
नव डिजाइनक घर बना कए
सन्तुक सन रेडिओ घुघुआबितहुँ
लहना आर तगेदा धरितहुँ
टका आनि कए फुर्ज कए लितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(इंजीनियर)

हे कविकोकिल
आधुनिक युग में जहाँ जैं होइतहुँ
कोनो ठाम इंजीनियर रहितहुँ
बिरकी में बिजुली लए जइतहुँ
अहड़ रजदी बिद्र नहि बनितहुँ
मरती समटा खेत रोपितहुँ
ट्रेक्टर में सूबे हपिअयितहुँ
नहिंत कलमहुँ टेबार करितहुँ
हे कविकोकिल
आधुनिक युग में जहाँ जैं होइतहुँ

(प्रोफेसर)

हे कविकोकिल
आधुनिक युग में जहाँ जैं होइतहुँ
कोनो ठाम प्रोफेसर रहितहुँ
लंदन सँ पी०एच० डी० लयितहुँ
लाख गाइ इन्क्रिमेंट पबितहुँ
सेंटर और टेबुलेटर रहितहुँ
कतोक विषयक कोर्स में रहितहुँ
सिनेट सिंडिकेट में रहितहुँ
एम० सी० सी० केर कैप्टन रहितहुँ

दोथी लए सीरम में पहितहुँ
नीलमेघ सम्मेलन देखितहुँ
सामन्तक अधिकारी बनितहुँ
प्रिन्सिपलक दरबारी रहितहुँ
तेज अनार मुनक्का खइतहुँ
एक्सिडेंटा ओ अजन्ता जइतहुँ
जनता केर विलास में बढ़ितहुँ
फाटक मसुल चार्ज कए लितहुँ
नोटहि में कलमहुँ में मपितहुँ
फोकी दा चढ़िआ कें दबितहुँ
हे कविकोकिल
आधुनिक युग में जहाँ जैं होइतहुँ

(डाक्टर)

हे कविकोकिल
आधुनिक युग में जहाँ जैं होइतहुँ
एम० आर० सी० पी० डाक्टर रहितहुँ
कओ सए टाका नित्य कमबितहुँ
रोग-साधना में नहि चूकितहुँ
कुहर ऐकाँ रोगी पर थूकितहुँ
स्टेथिस्कोप मुह बनओने रहितहुँ
कम्पाउंडर पढ़ओने रहितहुँ
हे कविकोकिल
आधुनिक युग में जहाँ जैं होइतहुँ

(वकील)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
हाइकोर्ट मे प्रैक्टिस करितहुँ
नहि चलि सकितए खेबो खरचा
गुह विभुआओंसे भरिल हि रहितहुँ
गाउन मे कैसरी गटपटितहुँ
पुनक कली कोट मे खोंसितहु
गुआचलक असरा मे रहितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(अफसर)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
कोनो विभागक अफसर रहितहु
निश्चय आई० ए० एस० भए जइतहुँ
लिपिकवर्ग पर रुब जमबितहुँ
चश्महि तर सँ आँखि गुड़रितहुँ
कनफेरेंस, सेमिनार मे जइतहुँ
टी० ए० सँ कोठ्ठ केँ भरितहुँ

तीस हजारी कार कीनितहुँ
श्रीमती सङ चक्कर कटितहुँ
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

(नेता)

हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ
सिरजह केपटा पाग झारि
नेता केर समटा ड्रेस बनितहुँ
पाँड़ा पनक सिल्ली खइतहुँ
सदिखन पटना दिल्ली जइतहुँ
सभ विषय पर भाषण करितहुँ
पहुनो टा उद्घाटन करितहु
हे कविकोकिल
आजुक युग मे अहाँ जँ होइतहुँ

—: o :—

अथार्थ

[एक]

हमरा घर लग रहइछ एकटा
साठि वर्ष केर वृद्धा
सुनरी सन उज्जर छइ ओकर केस
ठेंक ठेंगाओल आँखि
झलकि गेल छइ दाँत
चोटकि गेल छइ गाल
मुदा न ककरो बूझि पड़इ छइ
ओकर असल उमेर
नकली एक मैं रहल सभटा केस
रहल टिपल नइ
मुह मे लागल सुन्दर दाँतक सेट
काजर कारल आँखि
पोनि नेने अछि पाउडर सँ ओ गाल
प्रेम-प्रणय सँ रहइछ सदिखन काल
उज्जर दप दप छैक छिक छिक शिल्क केर लुगा
आओर करिआ आडी
बात बात मे छिटकावैछ बतीसी
जेना कोनो हो शुद्ध पोडशी
रूपवती सुकुमारि

यथार्थ

[दो]

हमरा घर लग रहइछ एकटा
बीस वर्ष केर बाला
कान्ति जकर छइ दिव्य
सेब सनक छइ गाल
डोका सन-सन आँखि
खड़ सनक अरुंस
दाड़िम सन-सन दाँत
ओ छिड़िआएल केस
मुदा न ककरो बूझि पड़इ छइ
ओकर असल उमेर
कौन वयस मे
पैरस लेसक धकाए
घरक धिकि गिरथाइनि
बनय टनय नहि ओकरा छैक पसिन्न
बूढ़ि सेकाँ ओ बाजए गढ़ि-गढ़ि
सभटा सीमल बात
पहिरए मोटका नन्नगिलाउ केर साड़ी
आडिक छैक न घाट
नहि ओकरा जीवन सँ किछुओ मोह
जानि न कखन मृत्यु देति ओ बाधि
लावरयक अपमान
धिक ई विधिक विधान

बिजुलिक दिमाग आ' यन्त्रक जाँत

बिजुलिक आधुनिक दिमाग सँ
होइछ [illegible] कठिन प्रश्नक समाधान
[illegible] अंक खेल
आ' [illegible] गीत
[illegible] जाइछ [illegible]
[illegible] ओ वेदमन्त्र
आ' संचालित होइछ [illegible]
लन्दनक छब्बीस वर्षीय इंजिनियर
[illegible]
फोलि देल युग युग सँ [illegible]
आ' काटि देल कल्पनाक पाँखि
अपने हम पाछाँ छी
कनि हमर आगाँ अछि
सोचाँ मे लक्ष्य नहि
देग मुदा ससरल जाइछ
देखि चित्र आधुनिक विज्ञानक उपलब्धि
आ' बजट मनुक्ख कें राकेट उड़बैत
आ' राष्ट्रिक वाणि जेकाँ यन्त्रक जाँत मे दड़रैत
नैतिकता, आस्था ओ अध्यात्म कें

भारतक माटि सँ

धन्य भारतक माटि,
होइत छीक एते [illegible]
युग-युग सँ [illegible] छह तोरो
[illegible] दऽकान
तोहर वक्ष पर टहलि रहल छहु
[illegible] सन्तान
ढोल नगाड़ा बाजि रहल छह
तोरह आबहुँ नीन
फोलह [illegible] आ देखह
[illegible] चीन
[illegible] न [illegible]
नहि [illegible] मधुगान
[illegible] तांडव [illegible]
छहु देशक आह्वान
मानि लेह हे माटि

(चीनी आक्रमण काल मे रचित)

—:०:—

सोन दाइक नव चिट्ठी

हम करइत छी नितदिन परेड
चलबइ छी बन्दुक लौंभ-प्रात
देशक खातिर मरि जैब मुदा,
नहि बढ़ए देबै चीनीक लात
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

गाँधी भिकाइ आदर्श महर
भगवान् बुद्ध केर [illegible]
नहि [illegible] सकत [illegible]
चीनी [illegible] अति [illegible] गोप
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

हल्दी घाटी केर प्रांगण सँ
बहइछ हिमगिरि पर [illegible]
झाँसिक रानी केर [illegible]
सुनयन गाथा [illegible] धार

से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

लक्ष्मण रेखा नहि लाँघि सकल
मद सँ प्रमत्त लंकाधरेश
ई मैकमेहन थिक सैह रेख
जे पार करा गए जैत शेष
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

विस्तारवाद नहि नीति हमर
भारत सभ दिन सँ अछि उदार
"हिन्दी-चीनी भाई भाई"
छल ढोंगमात्र चीनक प्रचार
नहि करतइ केओ परतीत ओकर
जकरा नहि कनिओँ छैक शील
महिसक आगाँ बेसुरक अवाज
तहिना ओकरा लए पंचशील
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर।

लगलैक सेहन्ता फकरा मे
जे देखत हमार प्रजातंत्र
आधार जकर अनुत्तरपूर्ण
ओ सत्य अहिंसा मूलमन्त्र
एहि स्वतंत्रता केर रक्षा लए
सर्वस्वक हम कए देब दान
हाँही विरवा किन्तु कए न सफल
हम ताहि देब अन्तक गुमान
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

इतिहास लिखल स्वर्णाक्षर मे
हरिअर सिंह केर नाम अमर
नायक मुंशी सन वीर सँ जनए
जे आत्म-विसर्जन कएल समर
भारत दशक सैनिक बल पर
अछि हमरा सभकेँ बड़ गुमान
अनुशासन-प्रिय अछि जतए लोक
सकलहुँ नहि जोड़ा जकर आन
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

देशक खातिर उत्सर्ग कएल
युग सँ जोगीस मदरमाला
ओंठी, बाली ओ नकमुन्नी
आ' चारि भरिक कटगर बाला
थिक अल्प बचत एक अनुष्ठान
नहि बढ़ि कए एहि सँ दान-पुण्य
जे नहि परवाहि करए देशक
से महामूर्ख थिक बुद्धि-शून्य
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

मोटर हाँकब हम सीखि लेल
थिक टाइप करब बड़ सोझकाज
मलहम-पट्टी पहिनहिं सीखल
समहारि लेब आकस्मिक काज
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

अनतीएँ मेल छवि एहिठाम
नायक सरोजिनी सनक नारि
हुनका लोकनिक आदर्श कएए
ओ पाबि सफल पेकिङ्क नारि

से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

बारह नम्बरक सलाइ अहाँ
पटना सँ किनि जे पठादेल
तैआर कएल नव नव डिजाइन
स्वेटर मौजा पलटनक लेल
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

चीनी फट फेंश कुहुनारिनि
मुह मे नहि एको रती पानि
भोपल-भापल उसनल स्वरूप
नहि सुन्दरता मे कतहु मानि
भारत सौंदर्यक ज्ञान थोक
नहि परतर एकर करत आन
कश्मीर सेब सन गाल जतए
आ मुख लगइत अछि दूर्गंधान
अदुलक कोढ़ी सन ठोर जतए
तदपर कलनहुँ सुरकीक रेख
सभ दृश्य जतए नयनाभिराम

आ तरुआइरि सन भौंह-रेख
से लिखलनि अछि श्री सोनदाइ
राइफल ट्रेनिंग केर सेन्टर सँ
एहि हरिअर-हरिअर कागत पर ।

(चीनी आक्रमण काल मे रचित)

—: o :—

उपलब्धि

रातिखन—

कतहु सँ हेको-हेकोँक आवाज
कविगोष्ठी मे आएल छल
रसास्वादन जकर कएल कुण्ठा-ग्रस्त प्रबुद्ध श्रोता लोकनि
—आ' कविगोष्ठीक अध्यक्ष महोदय

भोरखन—

स्थानिक रौन्ड बैन छलाह
स्वास्थ्य-विज्ञानक गोर चारियेक बेत्ता
संगहि गोर दसेक हुहुन्करि हुहुआइत छल
आ' कोनो नम्बहआ तारिकाक आगाँ-पाछाँ
आटोग्राफ लेबा लेल बेहाल छलाह
स्थानीय कालेजक एगटा प्रोफेसर

दुपहर में—

यूनिवर्सिटी लेक्चर थियेटर मध्य
आयोजित छम कनो विचार-गोष्ठी
जकर विषय छल 'इमोशनल इन्टेग्रेशन'
जाहि मे अध्यक्षता करथि एकटा मनोवैज्ञानिक पंडित
आ' उद्घाटन एकटा फिल्म निर्माता

राति में—

देखनि छलिअनि पंडित जी के
टोस्टक संग चाहक चुस्कीलेत
पैदिकोजी मेटला सिनेमे मे
देखए आएल छला राजकपूरक 'सतरंगी तमाशा'
संग मे गृहणियो छलथिन
साड़ीगन पहिरने, लिपस्टिक लगौने
आ' किदनि-किदनि पंडितजी संग फुसफुसैत

—:०:—

मनुष्यक अस्तित्व

मनुष्यक अस्तित्व
पेटर मे जेन कोनो डेगो नाह
आ' निहारि पाथर मे गुटकल कोनो खोताक चिड़े
मालरि जेकाँ थरथर कँपैछ जकर कोँढ़
आ' अधर पर परिव्याप्त व्यथाक पातर रेख
माँसो पर ठाढ़ अछि
हाड़ पांजरक ई शरीर
एक्के नियम सँ संचालित होइछ
गरीब आ अमीर
जिनगी भित चढ़इत अछि चिता मसान मे
मलिक बकरा भिक सारिपहुँ मनुष्य
उच्च आदर्श जकर निहित
आत्म-बलिदान मे
ओकर सकल अस्तित्व .
युग युग सँ पोसल कुंठा आ आकांक्षा
रहि रहि कए उफनाइछ
आ दर्प सँ भरल मनु सन्तान
सदिखन हनमनाइछ

इहे विवेक ओकर उपलब्धि
आ इहे ओकर परंपरा
आ एकरे परछाँहे ओ सेराइ अछि दिन-राति
आ चढ़बै अछि पोंतर पर निर्बोल सोनक पानि

—: o :—

टहाटही इजोरिआ मे—

टहाटही इजोरिआ मे—
माटी स्वच्छ अछि
मुदा अनेदय ओ महाप्रलय मे
केवल साफके टा ओ अछि
सिन्धु ज्वारसँ भरा पर पसरइ अछि
आ हृदय मा अन्धकार
अनन्त प्रसार मे छोट-छीन द्वीप

टहाटही इजोरिआ मे
जगत् प्रोद्भासित अछि
आ युगसन्धिक चौबट्टी पर
घटोही अछि पथभ्रष्ट काग

—: o :—

शौर्य मे
ककरो सँ उनैस नहि

सत्य ओ अहिंसाक पुजेगरी बिकहुँ हमरा लोकनि
मुदा तँ शौर्य मे ककरो सँ उनैस नहि
शरीर सँ पातर लकलक होइतहुँ
आस्था हमर कुंठित नहि
मर्यादा ओ सांस्कृतिक प्रतीक जेँ हम अनन्तअलहि स
तँ नहि भेल अछि हमर विवेकक ह्रास
हमर रण-कौशल ओ पराक्रमक गाथा
ओतबए पुरान अछि
जतेक हमर देशक इतिहास
हमर मशीनगन, मोर्टार, राइफल ओ रॉकेट-प्रक्षेपक
सभ किछु उजागर अछि
आ हमर टैंक ओ आर्टिलरीक सोभाँ
सभ किछु छागर अछि
के नहि जनैछ हमर कीर्तिशाली नैटक नाम
ककरा सोझाँ सफल प्रयास बेकाम
पैटन टैंकक नोसि तुड़कैत
जे मोर्चा पर कएल महाप्रयाण
सरिपहुँ अपन वीर हमीदक खातिर

भारत कें छैक गुमान
हमर देश जागि गेल अछि
जागि गेल अछि हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख ओ ईसाइ
हमर राष्ट्रीय एकता देखि कऽ
कक्कर कक्कर ने टोर पर फुफ्फी पड़ैछ
आ' अखिल गेल छइ हुंकाइ
भारतक एक-एक 'लाल'
सरिपहुँ 'बहादुर' अछि
मातृभूमिक रक्षा जकर मूलमंत्र
आ' जे कहियो सपनहु मे नहि भए सकैछ
विसरिओ कए परतन्त्र—

—१०१—

जवानकें सम्बोधित गृहिणीक दू आखर—

परम प्रिय प्राणनाथ हमर एगारह सए तीस
भेटि गेल भोमलग टाका गोर बीस
रेडिओ मे सुनने छलहुँ अहाँक सनेस
भलेटरी मे चल गेलाह बंगट गनेस
कहोदनि लड़ाइ बन्न भेलाक बोदो
लेल गेल अछि 'घलदूसि कैक खेप
आ' खड़ीओ उपारि कए लाल काकी कहने छलो
जे फक्षा कें नहि लगलनि हें कुतोक फलेप
दुगदुनो कजए हमहू पलटन में भरती हैब
आ' बापूए जेकाँ टैंक ओ मशीनगन खैब
तनने रहब बन्दुक बँटाएक नहि ध्यान
अगर रहत हमर सोहाग जँ चलिओ जैत अहाँक जान
माइओ दे छथि सपत तें रखबनि दूधक लाज
देश रक्षा सें बाढ़ि कए दुनिओ मे नहि दोसर काज
परसू सँ बाबी घर खेलनि अछि खाट
पुबरिआ घर छड़ाए गेल आ' लागि गेल टाट
आएल छलथिन मौसरामनी मे छोटकी पाइक बर

अनने छलथिन तीन मरिक असरफीक छड़ड़
गए गेल बिसुखि आ' महिस बिआए
एकटा सुरीक बान जे हम सीपी डी बिआए
मोन होइए भाटा अदौड़ी खाए
मरुआक रोटी, गरचुन्नक साग नें गड़ एकटा कोंच मिरचाइ
बाड़ी में उपजल छल मकइ दस सेर
काटि कऽ कोड़िआ सम लऽ गेल जनेर
आङन में कुकरइ अछि कोआ सिंह भोर
अहाँ बिकहुँ गुड़ी आ हम बिकहुँ डोर
कोइल रा सँ आएल छल माछ दइीक भार
उतारा देब अलदी धूकि एकरा तार
आदा इति चन्द्रकला तारील पचीस
पावथि जवान मधुकला आ जिग्मर एगारह सए तीस'

(पाकिस्तानी आक्रमण काल में रचित।)

—: o :—

प्रयोगवादी

गमछा

ई जिक प्रयोगवादी गमछा
साहिकक तोंही
आ' पुरुखा लोकनिक धराउ
सुदा आजुक प्रज्ञा-परिणत लोक एकरा
लपेटै अछि डाँड़ में
आ' लपेटबा सँ पहिने
जेँ चाँपितथ आँगुर नहि
भरिसक तेँ धोअएबा सँ पहिनहि एहिपर
हरबी चढ़बैत अछि
ई देखि लिअ नव लोकक नव प्रयोग
धोआ सजा कऽ
पहिरबा सँ पहिनहि
एकरा गोपरीड़ में घेरि लेल
आ' धो-धाए कऽ पहिरबाक प्राचीन परम्परा
धूलि में झोंकाए गेल

—: o :—

हिलकोर

[: ५५

भारत-नेपालक सीमान्तक ग्राम मध्य
ओ कोनो दाप शिला जेकाँ अरइत छलि
श्रम सँ क्लान्ति छलैक ओकर दुइ आँखि
आ' कोनो अज्ञात देशक अपरिचित भाषा मे
ओ बहुतो गप्प बजैत छलि
आँखि मे छलैक ज्वाहरि
आ' गगनक नीलिमा
ओ केशक जड़ सँ हुलकी देत भगवान भास्कर
हम ओकरा देश ने छलिअइ
लुत्ती सन दुपहरि मे
सीमान्तक ग्राम मध्य
जाहि ठाम श्रम छैक
क्लान्ति छैक
ओ छैक सुन्दर साँझ
'मुद्री' भरि भात छैक
आ' सरल माटी दालि
सरल आकन नाच छैक
आ' कंठ भरल गीत

हम ओकरा देशने छलिऐ'
ज्योत्स्ना-स्नान फागुनक राति मे
सुता कउसन कए हमरा हाँइछ
जे हम नहि देखिलिऐक
जेना हम किच्छु देखनहि ने होइ
आ' ई सभ हमर उद्भ्रान्त कल्पनाहो

—:०:—

जय जवान
जय किसान

छुच्छ करल जननीक कोर एहि विषम काल मे लाल
त्याग तपस्या सँ गाँधल जे सह अतिरथक माल
आदर्शक पाछाँ बलिदानी व्यापक जे व्यक्तित्व
"ताशकन्द" केर उपलब्धि थिक जनिक अमर छतित्व
संकल्पक कुबेर जे मानव भारत माँ केर पूत
हिमगिरि सन गम्भीर छला जे सरिहुँ शान्तिक दूत
गौतम, गाँधी आर जवाहर केर जे रखलनि टेक
कएल उजागर धरती अपन मित्र पनीज अनेक
ताहि "बहादुर" मानव कें अर्पित अछि श्रद्धा-फूल
नहि विगाड़ि सकलनि जनिकर किछु मदवा ओ दिक्‌शूल
"जय जवान" ओ "जय किसान" केर स्वर परसल सग ठाम
लिखल रहत सोनक आखर मे शास्त्रीजी केर नाम
लोकतंत्र केर रक्षा खातिर विसरलाह नहि नीति
परम्परा केर अनुगामी भारत केर अमर विभूति
एकताक सन्देश अमर देए स्वयं गेला सुरधाम
"लाल बहादुर" अमर भए गेला, विश्व करए गुणगान

युगबोध

Library 42791

जीवक अछि
जीबि लिअ
जीवन रस पीबि लिअ
तीत लागए
मीठ लागए
कहुना कऽ
बाँटि लिअ

जकरा जे भोग होइ
करए दिअउ
कहए दिअउ
बाजय तँ
घूरि जैब
विरड़ो बसात मे
रसे सँ घूरि जैब

बुद्धि पड़ल रॉकेट पर
भावना पशुआएल
नीति ओ अनीति मध्य
किया भोतिआएल,

ओर नहिं छोर नहिं
सब किछु निपता
ससरल जाइछ डेग मुदा
सोभहीं मे खसा

नाहि छा जिनगीक
इएह थीक सभ्यता
मानवक पृष्ठ पर
अंकित अस्तव्यस्ता

करइत अछि मील केर
धम्मा अनबोल
बिजुलिक इजोत मे
चकमक अछि टोल

पंखाक हवा मे
तेराए गेल चाह
विचारक प्रवाह मे
मौन दुखिताह

बदलि गेल युग
सुदा पुरनके अछि तान
गिलोठने कवि पजियार
भरि मुह पान

फोइलाक सभ्यता मे
नवल धवल वस्त्र

सूत्र वाक्य चाबाक
कहबा लए अस्त्र

युग अछि प्रयोगक
विज्ञानक सबदास
नव मान्यताक तड़
बदल मनक प्यास

कोन थीक टलहा
ओ कोन थीक सोन
युग सन्धिक चौबट्टी पर
ठकुआएल मोन

अतृप्त आकाक्षा
की कुंठाक राज
मौलिक उपलब्धि थीक
जीवन केर साज

पछरा बसात मे
मोन भेल घोर
मथि गेल गई सँ
झाँसि काल ठोर

गुनैत रह धुनैत रह
पूर्वक इतिहास
आधुनिक सभ्यता सँ
टेकल अकास

अगट बिगट किछु नहि
मात्र दृष्टि-दोष
युगक सङ बदलि गेल
अर्थ शब्दकोष

जीवक अछि
जीबि लिअ
जीवन रस पीबि लिअ
तीत लागए
मीठ लागए
कहुना कट
घोंटि लिअ

जकरा जे मोन होइ
कहए दिअ
करए दिअउ
शाबब सँ
दूरि बैस
भिरड़ो बसात मे
रस्ते सँ पूरि जैत

बुधि चढ़ल रॉकेट पर
भावना पछुआएल
नीति ओ अनीति गध्य

क्रिया भोतिआएल
ओर नहि छोर नहि
सब किछु बिखरा
ससरल जाइछ बेग मुदा
लोभ्हाँ मे लटा

—: ० :—

बारह वर्षक बाद
सासुर यात्रा

बारह वर्षक बाद पुनः हम गेल छलहुँ कैलाश
नव धरानल नव हिनिग मे देखल नव प्रकाश
बहइत छल उनटा बसात चहुँदिशि बेहाल छल लोक
एसंगोट नहि साझी आश्रम हर्ष, विषाद न शोक
जिन्ना सँ पीअर कपेस भए गेल छलाह ससुर
मुह बिचुअओने सासु छली चटुआ पर जुमइत हर
सरहोजिक मुट्ठी मे चान्दल देखल [illegible]
अधरक किछु नहि सुकाति [illegible]
'महथा' टेल्ह मेल [illegible]
'नूनू' 'बीनू' आओर 'नीतू' देखितहि [illegible]
नंस लोटइ छल दरवज्जा पर कोचरा पर [illegible]
सादिक कें आइल सँ पहिने [illegible]
नया जमाना नया लोक केर [illegible]
छिटकावैत बर्तीसी देखल बिनु पैसिक [illegible]
आबेसी सरहोजे म कनहु आर न भेटथि सारि
'हलो माइडियर' 'ओ० के० मिस्टर' नवका युग केर गारि
उगटापल्टा करने देखल रखने किलमी चूल
काजिगान ओ साल बुनइ छलि 'लेग' 'आर्मी' 'पूल'

मेक-अप सँ एहन सन कम के रूटिग लए तैयार
कोरो गनि-गनि दुलहा लोकनि टोकसु अपन कपार
अन्धल काठ साइड जें कीड़ा कहुना नहि परकार
सासुक उपर छोड़इत देखल पुतहु के फुफकार
छाल्ही चूड़ा भेल अलोपित मात्र टोस्ट ओ चाह
बिनु बजने सेहो नहि भेटत भुखले रहब निर्वाह
भाम गुड़ुथ पुरबा कमाए, नवका टटाथु दिन राति
अनट बिनट जें किछुओ बचता सएहो करता लात
भए गेल घर सभक अवमूल्यन डेग-डेग पर दाओ
एहि महगी मे घटल जाइत अछि आपकता केर भाओ

—:o:—

गुम्म भेल ठाढ़ छी

वसन्त

गुम्म भेल ठाढ़ छी
नगरमपुरक चौबट्टी पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

पढ़बा लय आइत अछि
हेँन बान्हि चटिआ
आ' गुड़गुड़ाइ सकुरी सँ
आएल फटफटिआ

ताहि पर सवार कनि
नव वर-कनियाँ
गुड़लदी घोड़ी पर
चढ़ल आछि बनिआँ

पीत-बसना कनियाँक
जालीदार दोपट्टा
भूमि रहल पतझड़ मे
सगर परोपट्टा

साविक मे जनीजातक
एक मुट्ठी खोपा
आब तँ डेगे डेग
तपोबनो कोपा

साविक मे लोक पहिरए
सिरजइ ओ' चपकन
आधुनिक लोक कें 'ड्रेन पाइप' 'टी शर्ट'
वृद्धि गाएक पेंटी सन 'ट्रांजिस्टर' लटकन

गुम्म भेल ठाढ़ छी
नगरमपुरक चौबट्टी पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

ग्रीष्म

गुम्म भेल ठाढ़ छी
विरसाइरक पाकड़िक तर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

खुर्ची सन दुपहरि मे
मौन अछि घोर
भवि गेल गर्द सँ

आगिक मोल करैत
कीनइ छथि पीसा
फकरो नहि अपहत छै
परिसाइलक सीसा

उलडाक सोहारीमे
देह ठेढ़ पकुला
बिच्छू ओ कलभी मे
लुबधल अछि टिकुला
फलजुगही कलटिरबी
करैए अकहड़
कोइली सँ पूछइ छइ
'हमर बिआर कोनहर'

टेक मे लागि गेल
मकड़ाक जाला
ढग ढग अछि सन्तुफ
आ लटकल अछि ताला
गुम्म भेल ठाढ़ छी
चिरसाइरक पाकड़ितर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

वर्षा

गुम्म भेल ठाढ़ छी
महेन्द्रघाटक जट्टी पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

भीजि गेलनि मौसिफ
लज्जल तिन पड़िआ
भीड़ मे पचकि गेलनि
मागीफ अछि या

टिकरा धाबूक जुता मे
सन्हिआएल बेंग
परसू सँ गाड़ी नहि
जाइत अछि 'ढेंग'

खसि पड़ला घूटर आ
पाछाँ दू कौड़ी
आहिरे बा भीजिगेल
तीसी अदौड़ी

गुम्म भेल ठाढ़ छी
महेन्द्र घाटक जट्टी पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

शरद

गुम भेल ठाढ़ छी
मेहथू घाटक छहर पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

तुड़ा पिपरक झोंझ मे
दबलक अछि नीलकंठ
कोइलाक सभ्यता मे
चारू कात लंठे लंठ

मुकुन बाबू दोकान मे
मेटंता नटि रैंची
रुचिगर लगैत अछि
डोबहीक गैंची

परसू सँ एड्डिटाम
लागल बेसाह
तुक पर कुंभारपुर मे
पाचरोटी चाह

गुम भेल ठाढ़ छी
मेहथूघाटक छहर पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

—:०:—

हेमन्त

गुम भेल ठाढ़ छी
लोहना रोड टीसन पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

मोटरी सम्हराइ छथि
बुरहा ओ बुरही
मोसाफिरखाना मे
छिड़िआएल अछि मुरही

झाँजुरक झाँजुर
दोलडीक धान
बहिकिरनी हुम्मर
गिलोटने अछि पान

बिसरि गेल भियागुता
"साते ओ भवतू"
बबो आब पीत कें
खिसबइ छथि "धन-टू"

प्लास्टिकक फूल थोक
टेबुल केर शान
बदलि गेल रागरङ
बदलि गेल तान

गुम भेल ठाढ़ छी
लोहना रोड टीसन पर
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

EPILOGUE

गुम्म मेल ठाढ़ छी
लाल मौजिक मुहथरिलग
चुनबइ छी तमाकू
आ' देखइ छी तमाशा

गुड़-चूड़ा मिचराफड
फोंकइ छथि सरपच
बगड़ा सन खेला मे
मुटकल अछि संचनंच

बाबा कें होइतछनि
एक सलगाक जाड़
बाबीकें पेलकनि
मलेरिआ बोखार

घीच सन बात बाजए
पाच मरिक जीत
आहि रे बा गुमसरिगेल
कोबीक सुखीत

बुढिआक फूसि बीक
मौजिक मोर
भैआ कें मनधैत
भउजेलनि भोर

गुम्म मेल ठाढ़ छी
लाल मौजिक मुहथरि लग
चुनबइ छी तमाकू
आ देखइ छी तमाशा